

ଇହୁ 1. a. 1) desiderare. 2) adniti, contendere, quaerere, petere. BH. 7.22.16.12. (Huc trahi possit gr. *ἰσχύς*, ita ut sit pro *ἰσχύς*, propter adamatam conjunctionem litterarum σ et χ.)
c. **ସମ୍** 1) desiderare, **ସମୀହିତ** *n.* optatum, desiderium. HIT. 44.7. 2) assequi, adipisci. HIT. 103.2. 3) pera-

gere, perficere. RAM. I. 11.33.: ଯନ୍ତ୍ରକର୍ମ ସମୀହନତାମ୍
ଭବନତଃ.

ଇହା *f.* (r. ଇହୁ s. ଆ) 1) desiderium. 2) nisus, appetitus, consecratio. HIT. 37.6.: ବିତ୍ତେହା.

ଇହାମୃଗ *m.* (e praec. et ମୃଗ) lupus. AM.

ତ

1. **ତ** 1. 4. (ଶବ୍ଦେ) sonare.

2. **ତ** Particula enclitica quae in classica lingua tantum cum **କିମ୍**, **ନ** et **ଅଥ** conjuncta invenitur, **ନୋ** et **ଅଯୋ** idem valent ac simplices formae **ନ**, **ଅଥ**; **କିମୁ** autem significat 1) quanto magis. HIT. 4.11.: ଏକୈକମ୍ ଅପ୍ଯ ଅନର୍ଥୀୟ କିମୁ ଯତ୍ର ଚତୁଷ୍ୟମ୍; UR. 7.17. 2) utrum *in prioris sentiae parte*, et an in posteriore. KATHAK. apud Poleium p. 16.8.: କଥନ୍ ନୁ ତଦୁ ବିଜାନୋଯାଙ୍କ କିମୁ ଭାତି ବିଭାତି ଥା; Amaru-Sataka: ନ ଜାନେ ସମ୍ମୁଖୀୟାତେ ପ୍ରିୟାଣି ବଦତି ପ୍ରିୟେ । ସର୍ଵାଣ୍ୟ ଅଙ୍ଗାନି ମେ ଯାନ୍ତି ଶୋତରାଙ୍କ କିମୁ ନେତ୍ରତାମ୍. In dialecto Vêdica haec particula saepe conjungitur cum pronominibus, sine certâ, quae demonstrari possit, significatione, solum, ut videtur, ad orationis vim augendam, quâ in re cum particula ଇତ୍ q.v. convenit. E. c. KATHAK. ed. Pol. p. 4.3. inf.: ପ୍ର ତେ ବ୍ରବ୍ଦୋମି ତଡ଼ ନିବୋଧ; 13.5. inf.: ତଡ଼ ନା ତ୍ୟେତି କଶ୍ଚନ; sic etiam l.c. 17.11.; 14.4.: ସ ଏକା ଧ ସତ ଶ୍ଵଃ. MUNDOP. p. 94.7.: ତଦୁ ଏତଦୁ ଅକ୍ଷରମ୍ ବର୍ଣ୍ଣ ସ ପ୍ରାଣସ୍ତ ତଡ଼ ବାଙ୍ମନଃ; KENOP. 155.2.: କତ ଦେଖୋ ଯୁନକ୍ତି. ISOP.: ଅନ୍ଧନ୍ ତମ: ପ୍ରକିଶନି ଯେ ଅବିଦ୍ୟାମ୍ ଉପାସତେ । ତତୋ ଭୂୟ ଇତ୍ ତେ ତମୋ ଯତ ବିଦ୍ୟାୟାଂ ର୍ତ୍ତା: In antiquioribus Vêdorum partibus haec particula etiam cum Praepositionibus et Verbis conjuncta invenitur; Ros. Sp. p. 6. sl. 1.: ତଡ଼ saepius; ଅଭୂତୁ. (Cf. de hac particula Lassenium ad Hit. p. 4. et Frider. Windischm. Sankara p. 75.).

ଉଡ଼ାଖୁ 1. *p.* (ଅର୍ଦେ scribunt ଉହୁ gr. 110^a.) vexare.

ଉତ୍ତା, ଉତ୍ତାବତ୍ *v. ବଚୁ*.

ଉତ୍ତି *f.* (r. ବଚୁ dicere, s. ତି) sermo, loquela. HIT. 3.3.

ଉତ୍କୁ 1. *p.* conspergere, humectare. SA. 6.5. ଶୋଣିତୋକ୍ଷିତ sanguine conspersus. (Lith. *ūkana* tempestas pluvia, cf. etiam heb. *uisg*, *uisge* «water, a river», *uisgeach* «aquatic, watery, fluid, moist, pluvial», transpositis literis କୁ, ଷ, nisi *uisg* pertinet ad r. ବିଷ୍ଣୁ irrigare, unde ଉତ୍କୁ ortum esse possit, ejecto *i* et additâ sibilante, ratione habitâ euphoniae legis 99.).

ଉତ୍କାଳ *m.* (ut videtur, a r. କଙ୍କୁ, correpto କ୍ର in ତୁ, gr. 455., adjectâ sibilante, s. ଅନ୍ତଃ) bos, taurus, *in Vēdis etiam equus*. Ros. Sp. p. 8.5. (Goth. *auhsa*, Th. *auhsan*, germ. vet. *auhso*, Th. *auhson*, *auhsun*, nostrum *Ochs*, lat. *vacca* ut videtur per assimil. e *vacsa* cf. Pott. I. 234.).

1. **ଉତ୍କୁ** 1. *p.* (ଜାତୀୟ) ire (cf. ଉଡ଼ାଖୁ).

2. **ଉତ୍କୁ** 1. *p.* (ଶୋଷଣାଲମର୍ଯ୍ୟୋଃ) exsiccati; ornare.

ଉତ୍କାଳ *f.* olla. AM.

ଉତ୍ତ୍ରୀ 1) durus, asper, horrificus, terrificus. SU. 1.7. IN. 1.4. BH. 11.30.31. 2) *m.* nomen Sivi.

ଉତ୍ତରଦଶନି (*BAH.* e praec. et ଦଶନି *n.* visus, adspectus, a r. ଦୃଶ୍ୟ ଦଶନି s. ଅନ୍ତଃ) horrificus conspectu, horrificam speciem habens. SU. 2.24.

ଉତ୍ତ୍ରଶାସନ (*BAH.* ex ଉତ୍ତ୍ର et ଶାସନ *n.* jussus, a r. ଶାସନ *s.* ଅନ୍ତଃ) asperum, severum jussum habens. SU. 2.9.

ଉଡ଼ାଖୁ 1. *p.* (ଜାତୀୟ) ire.